Vol 4 Issue 11 May 2015

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

International Recognized Double-Blind Peer Reviewed Multidisciplinary Research Journal
Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063 Impact Factor :3.4052(UIF)
Volume - 4 | Issue - 11 | May - 2015 Available online at www.aygrt.isrj.org

'अस्ताचल की ओर' में सामाजिकचेतना

कविता चौधरी धर्मपत्नी नरेन्द्र कुमार साहरण
सहायक प्राध्यापक (हिन्दी विभाग) चौ॰ मनीराम झोरड़ राजकीय महाविधालय , मिट्ठी सुरेरां(ऐलनाबाद)

Short Profile :

Wife, Kavita Chaudhary Narendra Kumar Saharana is working as an Assistant Professor at Department of English in C. Manirama Jhorada Political Mahavidhalaya , Mithathi Sureram (ailanabada).

प्रस्तावना :

इतिहास के परिपेक्ष्य में भारत के सांस्कृतिक पतन के कारण और परिणामों का विशलेषण श्रीगुरूदत्त कृत ऐतिहासिक उपन्यास 'अस्ताचल की ओर' (भाग १,२,३)(१९८४-८५) में रूपायित हैं। उपन्यासकार ने एक ओर सम्राट समुन्द्रगुप्त के काल के साम्राज्य-विस्तार ओर दूसरी ओर सांस्कृतिक ह्रासको वेद और दर्शन शास्त्रों की विवेचना के सन्दर्भ में प्रस्तुत किया हैं। उपन्यास के तीन भागों में इतिहास के लम्बे काल में समेटा हैं- सम्राट समुन्द्रगुप्त से लेकर सम्राट कुमारगुप्त और स्कन्दकुमार तक। समुन्द्रगुप्त के काल में अनपढ़ रूढ़िवादी ब्राह्मणों का बोलबाला था, ब्राह्मणों में स्वार्थ भावना घर कर चुकी थी, परिणामस्वरूप ब्राह्मण वर्ग की बुद्धि कुंठित होने से देश और समाज पतन की ओर जा रहा था, कुमारगुप्त के शासन काल में ब्राह्मण-विद्रोह इसका परिचायक हैं। उपन्यास 'अस्ताचल की ओर' एक विद्वान ब्राह्मण द्वारा इस सांस्कृतिक पतन को रोकने, ब्राह्मण वर्ग व शासकीय वर्ग को समुचे वर्ग और समाज को परिवर्तित करने में अक्षम हैं। एक समय में वह प्रभावित कर सकता हैं, परन्तु वर्गीय स्वार्थ और रूढ़ियां परिवर्तन की अपेक्षा नहीं रखती, परिमाणतः या तो वह व्यक्ति अपनी पराजय स्वीकार करें या पलायन करे। प्रस्तुत उपन्यास व्यक्ति समाज के द्वन्द्व को इसी सन्दर्भ में रूपायित करता हैं।

पंडित शिवकुमार विद्वान ब्राह्मण होने के नाते देश की बुद्धि बनना चाहता हैं, रूढ़िवादी ब्राह्मण वर्ग को वेद और शास्त्रों के अनुरूप कर्म करने की प्रेरणा देता हैं, शासकीय वर्ग को धर्मयुक्त, लोक-कल्याण हेतु कार्य करने का आह्वान देता हैं, परन्तु जब लोकहित बुद्धि और शासकीय स्वार्थ एक दूसरे के आड़े आते हैं, तो वह झुकता नहीं, बल्कि उस स्थिति से पलायन कर जाता हैं। वे भारतीय संस्कृति के पतन का कारण ब्राह्मण वर्ग को मानते हैं,...'भारत का पतन उस समय से ही आरम्भ हो गया था, जब ब्राह्मण समुदाय ने बुद्धिहीन कार्य करने आरम्भ

कर दिये थे। ब्राह्मणों में बुद्धि का लोप हुआ तो फिर राजाओं की बुद्धि कुंठित होने लगी। उससे सर्वनाश आरम्भ हो गया। पतन की यह प्रक्रिया समाप्त नहीं हुई। महानन्द के काल में बढ़ गयी और आज तो समस्त समाज में व्याप्त है।" ब्राह्मण अपनी विद्वत्ता और निस्वार्थ भावना में देश, समाज का कल्याण और संस्कृति को उन्नत कर सकता हैं। सम्राट समुद्रगुप्त के राज्य में पहले राजपुरोहित और बाद में महामात्य पद को अवैतनिक प्रतिष्ठित करते हुए पं° शिवकुमार सांस्कृतिक मोर्चे को सुदृढ़ करना चाहते हैं, ताकि देश संस्कृति और धर्म के आधार पर एक हो। वे राजनीतिक शक्ति के आधार से साम्राज्य को बढ़ाने के पक्षपाती नहीं रहे। इसी कारण अश्वमेघ यज्ञ को करवाने में उनकी कभी सम्मति नहीं रही। सम्राट, पाटलिपुत्र का ब्राह्मण वर्ग, विद्वत परिषद् से उनके विचारों का साम्य नहीं हो पाया, क्योंकि वे यज्ञ का अभिप्राय–"परस्पर सहयोग और सामूहिक हितों का चिन्तन मानते थे। इसलिए यज्ञ के लिए नया स्वरूप निर्धारित किया गया, परन्तु ब्राह्मण वर्ग, विद्वत परिषद् के अध्यक्ष पंडित विभूतिचरण आदि राजपुरोहित की मान्यताओं को नहीं स्वीकारते, क्योंकि इनके अपने स्वार्थ बने रहते हैं। यज्ञ के परिणाम विपरीत निकले और राजपरिवार का कलह सर्वविदित हो गया, क्योंकि बड़ी रानी अपने बेटे को गद्दी दिलवाने की उत्सुकता में आचार्य सांत्वना कुमार से साथ महाराजा की हत्या का षडयंत्र रच बैठी, जो सफल नहीं हुआ। एक ओर राजनैतिक षड्यंत्र और दूसरी ओर यज्ञ के शास्त्रीय स्वरूप की विकृति तथा यज्ञ के पुरोहित आचार्य सांत्वना कुमार राजनैतिक प्रपंच में लिप्त होकर पंडित शिवकुमार की तार्किक उक्तियों व बौद्धिक उद्धरणों से परास्त होकर उनका विरोध करते हैं। पंडित जी राजनैतिक षड्यंत्रों से निर्लिप्त रहते हैं। अतः पाटलिपुत्र से पलायन कर जाते हैं। उनका यह पलायन व्यक्ति समाज के द्वन्द्व को उभारता हैं। पंडित जी निस्वार्थ भावना और अपने स्वार्थ को नहीं छोड़ पाता, दोनों की मान्यताओं की टकराहट में द्वन्द्वरत पंडित जी उस स्थिति से स्वयं को अलग लेते हैं। उनका यह अलगाव ही बौद्धिक विद्रोह हैं।

पंडित शिवकुमार राष्ट्र–सेवा और लोक–कल्याण भावना से राजकीय कार्य को धर्मयुक्त करते हैं। समाज में उनकी बढ़ती हुई प्रभुता को राजकुमार चन्द्रगुप्त उसके साथी और कुछ ब्राह्मण स्वीकार नहीं कर पाते। उनके धर्मयुक्त कर्म की आलोचना होने लगती है। उनको अपमानित करने के लिए मिथ्या आरोप लगाया जाता है। ब्राह्मण वर्ग विरोध करने लगता हैं कि वेदों का अध्ययन कन्या या शूद्र नहीं कर सकते हैं जबकि पंडित जी अपने बेटे बृहस्पति के साथ एक ब्राह्मण कन्या मृदुला को भी वेदाध्ययन कराते हैं। मृदुला परम सुन्दर है और कुशाग्र बुद्धि हैं। पूरे नगर में बवंडर आ जाता है। "ब्राह्मण को समाज का मस्तिष्क कहा जाता हैं। जब मस्तिष्क ही बिगड़ गया तो समस्त समाज पतन की ओर चल पड़ा।" उपन्यास में महाभारत कालीन उद्धारणों को प्रस्तुत कर यह स्पष्ट कर दिया कि महाभारत काल से ब्राह्मण वर्ग अधर्मयुक्त कार्य कर के पतित होने लगा था। पंडित शिवकुमार ब्राह्मण को निस्वार्थ भाव से लोक–कल्याण धर्मयुक्त कर्म का पर्याय मानते हैं। इसीलिए ब्राह्मण वर्ग के साथ उनका विरोध हैं। अतः वे परिवार सहित पाटलिपुत्र को छोड़कर कशमीर के मार्तण्ड मन्दिर में पहुंच जाते हैं। मृदुला और उसकी मां कल्याणी भी नगर को छोड़कर चली जाती हैं।

मार्तण्ड मन्दिर के पास कुटिया बसाकर, शिवकुमार परिवार सहित, साधना, स्वाध्याय में लीन रहते हैं। कुशाग्र बुद्धि बहृस्पति और मृदुला भी वेदाध्ययन में व्यस्त रहते हैं। उनकी विद्वत्ता और ख्याति की धूम कश्मीर–नरेश प्रवरसेन तक पहुंच जाती हैं। राजा पंडित जी को राजपुरोहित या महामात्य नियुक्त करना चाहता हैं, परन्तु वे राजकीय सेवा करने से इन्कार कर देते हैं। राजा मृदुला के प्रति आसक्त होकर उसका अपहरण करने की नाकाम कोशिश करता हैं। पाटिलपुत्र से पंडित हरिषेण का परिवार वहां के राजकीय कार्य से कश्मीर पहुंचताहैं। दोनों राज्यों, विदेशियों को भगा कर साम्राज्य स्थापित करने पर बातचीत करते हैं, पर इसका परिणाम कुछ भी नहीं निकलता। पंडित शिवकुमार स्पष्ट कहते हैं– "जब ब्राह्मण दुर्बल हुए तो राज्य ने उनको क्रय करना आरम्भ कर दिया। जो ब्राह्मण स्वाभिमानी थे, जिन्होंने स्वयं को बेचा नहीं, उनका चरित्र हनन किया गया अथवा बन्दी बना लिया जाने लगा। इसी कारण मैं पाटिलपुत्र से भागा था। मूलरूप से मेरा राज्य से यही विरोध था। मैं अपने सांस्कृतिक मोर्चे को सुदृढ़ करना चाहता था।" पंडित जी राजनीतिक शक्ति से साम्राज्य गठित करने के पक्षपाती नहीं थे। वे सांस्कृतिक साम्राज्य चाहते थे– 'कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक और सिन्धु नदी से लेकर गंगा और ब्रह्मपुत्र से सागर–संगम के स्थान तक। यहां के निवासियों में धर्म के नियम समान हो, व्यवहार के नियम समान हो, मुख्य विचार समान हो और अर्थ व्यवस्था समान हो।" परन्तु वर्तमान राज्य सत्ता और मंत्रीगण के

रहते यह संभव नहीं था। राजमहल के अतिथिगृह में शिवकुमार को विष देकर मारने की योजना क्रियान्वित होती हैं, वह अपनी दिव्यदृष्टि से बचकर, परिवार सहित, कश्मीर से पलायन कर जाते हैं और तिब्बत पहुंच जाते हैं। यह सर्वविदित है कि समाज और सत्ता परिवर्तन की अपेक्षा नही रखते। यदि कोई एक व्यक्ति अपनी विद्वत्ता से उनको प्रभावित करके संशोधन की मांग करता हैं, तो सत्ता-पोषक उसको मरवाने की साजिश कर देते हैं, जैसे कश्मीर नरेश के अतिथिगृह में पंडित जी के लिए हुई, या मिथ्या आरोप लगाकर अपमानित करने की कोशिश होती हैं जैसे पाटिलपुत्र में हुआ। पंडित शिवकुमार का उस स्थिति से पलायन व्यक्ति समाज के द्वन्द्व को रेखांकित करता हैं। वे राजकीय कार्यों से दूर रहकर स्वाध्याय और साधना करना चाहते हैं।

तिब्बत के महाराजा शिवकुमार के अतीत को जानते हुए उसका सम्मान करते हैं, और राजकीय अतिथिगृह में रहने की अनुमति देते हैं। तिब्बत में बौद्ध धर्म की मान्यता रही है। शिवकुमार महाराज को वेदसम्मत व्याख्याएं देते हैं, अपनी विद्वत्ता और तार्किक बुद्धि से वेद-पुराणों के संदर्भ में समस्याओं का समाधान करते हैं। तिब्बत के राजगुरू के लिए यह स्थिति असहाय हैं, अतिथिगृह में आग लगा दी जाती हैं। शिवकुमार के परिवार को मारने का उपक्रम किया जाता हैं, पर शिवकुमार और बृहस्पति अपनी दिव्यशक्ति से अपने परिवार की रक्षा करते हैं। यह देख कर तिब्बत की जनता उन्हें अवतार मानकर सम्मान करने लगती हैं। राजगुरू मृदुला के रूप में आसक्त होकर उससे विवाह करना चाहता हैं, और उसकी अस्वीकृति पर वह शिवकुमार के विरूद्ध षड्यंत्र रचने लगता हैं। शिवकुमार महसूस करता हैं कि मृदुला जलती ज्वाला के समान है और वह उसमें भस्म होने जा रहा है।" वह अपने लिए किसी राज्य में विप्लव फैलाना नहीं चाहता उसके मन में यह इच्छा निरन्तर बनी रहती हैं कि कब तक वह इस प्रकार भागता रहेगा। कीर्तिमान बृहस्पति के प्रयत्नों से शिवकुमार का परिवार तिब्बत में ही रह जाता हैं। तिब्बत के न्यायलय में शिवकुमार स्वयं को शतप्रतिशत बौद्ध बताता है क्योंकि प्रत्येक कार्य बुद्धि युक्त करता हैं। महाराजा शिवकुमार को अपना राजगुरू नियुक्त कर देते हैं और राजकीय कार्यों में उत्पन्न होने वाली कठिनाईयों के विषय में परामर्श लेते हैं। बृहस्पति को राज्य भर के विद्यालयों का अध्यक्ष नियुक्त कर दिया जाता हैं। उसने पाली भाषा का संशोधन शुरू कर दिया। महामन्त्री के पुत्र कीर्तिमान और पुत्री का विवाह मृदुला और बृहस्पति से हो जाता हैं।

पंडित शिवकुमार द्वारा बताई गई नीतियों से राज्य और उसकी प्रजा में चेतना आने लगी और कल्याणकारी प्रगति होने लगी। महाराजा बृहस्पति को अपना युवराज बनाना चाहते हैं। पंडित शिवकुमार और बृहस्पति इस पद को स्वीकार नहीं करते। ब्राह्मण होने के नाते पिता-पुत्र दोनों धर्म का अध्ययन और आत्मान्नति के मार्ग को अधिक उपयुक्त समझते हैं इससे यह स्पष्ट हैं कि ब्राह्मण अपनी विद्वत्ता, निस्वार्थ-लोकहित भावना से देश का कल्याण कर सकता हैं।

उपन्यास में संकेत हैं कि समाज में धर्म के नाम पर अनेक विकृतियां आ चुकी हैं। ब्राह्मण वर्ग ने अपने स्वार्थ के अनेक देवी-देवताओं की मूर्तियों की पूजा, वस्त्राभूषण, भोजन, शयन, विश्राम आदि की व्यवस्था कर डाली। शिवकुमार का दूसरा बेटा सूर्यकुमार ब्राह्मण वर्ग में इसी रूप में प्रतिष्ठित हैं जबकि शिवकुमार ने मूलतः इन सभी व्यवस्थाओं का डट कर विरोध किया हैं। इस प्रकार की व्यवस्था दिन पर दिन जनमानस के गहरेगड्ढेंमें धंसती चली गई। परिणामतः युद्ध करती हुई सेना में भी धार्मिक विकृति से भय और निराशा व्याप्त गई। संगठित सेनाओं के सेनाध्यक्ष स्कन्दकुमार ने बिना किसी से परामर्श किए युद्ध-विराम की घोषणा कर दी सेनाएं वापिस लौट आई परन्तु देश के विभिन्न राज्यों ने इसे अपना अपमान समझा और स्कंद के राज्यभिषेक के अवसर पर राज्यों के नरेश उपस्थिति नहीं हुए। भारतीय सेनाओं के लौटते ही हुणों ने अपनी सेना संगठित की और कश्मीर को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया, सौराष्ट्र को भी अपने अधिकार में ले लिया। आनन्द वैरागी, मार्तण्ड जाते हुए रास्ते में युद्ध के विनाशकारी प्रभावों को देखते है स्वामी जी ने कश्मीर का वृतांत जानकार और युद्ध की विनाशलीला की जानकारी देते हुए आनन्द वैरागी देश के भविष्य के लिए मालवा में पल रहे, यशोधर्मन को देश की सुदृढ़ चट्टान व देश का रक्षक बनाने का निश्चय करते हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने गुप्तकाल के सांस्कृतिक ह्रासका विश्लेषण कर सह स्पष्ट कर दिया कि ब्राह्मण वर्ग चाहे तो देश को गौरव के पथ पर अग्रसर कर दें, चाहे तेा देश को रसातल की ओर ले जाये, एक लम्बी कालअवधि को समेटे हुए यह उपन्यास अत्यंत महत्त्पूर्ण बन गया हैं, जिसमे गुप्तकाल के ह्रासके साथ-साथ

देश का सांस्कृतिक ह्रास, राजनैतिक पतन, सामाजिक, धार्मिक विकृतियों का लेखा–जोखा प्रस्तुत हैं। उपन्यासकार ने सांस्कृतिक ह्रासकालीन स्थिति का सूक्ष्मता से व्यंजित किया हैं उपन्यास का मुख्य कथा–पात्र वेद, उपनिषद् शास्त्रों द्वारा निर्देशित धर्मयुक्त नीतियों द्वारा सांस्कृतिक साम्राज्य का पक्षधर हैं। जब–जब उसकी मान्यताओं का विरोध हुआ है, वही से वह पलायन कर गया। यह पलायन या स्वयं को उस स्थिति से अलग कर लेना, व्यक्ति समाज के द्वन्द्व को रूपायित करता है। पंडित शिवकुमार और आनन्द वैरागी समाज और देश के कल्याण के लिए निरन्तर द्वन्द्वरत रहे हैं। उनका द्वन्द्व व संघर्ष किसी व्यक्ति या समाजिक मान्यता आदि से न होकर, देश की अखण्डता के लिए विदेशी आक्रमणों को पराजित करने के लिए ब्राह्मण वर्ग को निस्वार्थ सेवा के लिए प्रेरित करने और सांस्कृतिक आधार की सुदृढ़ता के लिए है ताकि देश उन्नत हो सके।

१.अस्ताचल की ओर (भाग–१), गुरूदत्त, पृ. १५६
२.अस्ताचल की ओर (भाग–१), गुरूदत्त, पृ. ३२२
३.अस्ताचल की ओर (भाग–२), गुरूदत्त, पृ. ७३
४.अस्ताचल की ओर (भाग–२), गुरूदत्त, पृ. ८६
५.अस्ताचल की ओर (भाग–२), गुरूदत्त, पृ. २४२

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org